P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4* July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

गाँधीवादी प्रतिनिधि अन्ना हजारे और सत्याग्रह

विजय सर्राफ
एसोसिएट प्रोफेसर
एवं शोध निर्देशिका,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
झालावाड़, राजस्थान

वैशाली बड़ोलिया
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
झालावाड़, राजस्थान

सारांश

भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग लड़ने वाले महान् गाँधीवादी प्रतिनिधि व समाजसेवी अन्ना हजारे वर्तमान में विश्व नेता बन चुके हैं जो अन्याय व भ्रष्टाचार के लिए आम आदमी की आवाज बन कर सामने आए हैं। वे किसी भी राजनीतिक पार्टी की जगह स्वतंत्र रूप से कार्य करने में विश्वास रखते है। इन्होंने भ्रष्टाचार विरोधी जन आंदोलन में आम आदमी को जोड़ने व मानवाधिकारों के लिए एक निर्णायक लंबी लड़ाई की शुरूआत की और अभी भी वे अपने पथ पर अग्रसर हैं। इस दिशा में जनता को उनका पहला संदेश यही है कि "अन्ना रहे ना रहे यह मशाल जलती रहे।"

मुख्य शब्द : प्रतिनिधि, स्वराज, भ्रष्टाचार, मानवाधिकार, सत्याग्रह, जन लोकपाल विधेयक, वास्तविक लोकतंत्र।

प्रस्तावना

अन्ना हजारे के अनुगामी उन्हें वर्तमान पीढ़ी के साक्षात् महात्मा गांधी मानते हैं। जिस आदरणीय पुरूष की प्रशंसा महात्मा गांधी के रूप में हो रही है, वह साधारण है, लेकिन उनका लक्ष्य बहुत ऊँचा है। उनका पूरा और असली नाम किसन बापत बाबूराव हजारे है1। 15 जून 1938 को जन्मे भारत के प्रसिद्ध गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे का बचपन अत्यन्त गरीबी व मजबूरियों में निकला। महाराष्ट्र के अहमद नगर के भिंगर कस्बे में जन्मे अन्ना ने अपनी कठोर परिस्थितियों का सामना करते हुए फौज की नौकरी के बाद 1975 से रालेगण सिद्धि में अपने सामाजिक जीवन की शुरूआत की और अपने जीवन के पाँच सूत्र स्वीकार किये (त्याग, शुद्ध विचार, शुद्ध आचरण, निष्कलंक जीवन, अपमान सहने की शक्ति)(2)। उन्होंने प्रत्येक युवा को इन पाँच सूत्रों को अपने जीवन में अपनाने की सलाह दी है। इन्होंने प्रत्येक गांव व राष्ट्र को एक मंदिर, जनता को ईश्वर माना और जनता की सेवा को भगवान की सेवा माना। उनका मानना है कि "एक सामाजिक कार्यकर्ता को निःस्वार्थ भाव से समाज व देश के लिए काम करना चाहिए। कुछ लोग जो तुम्हें बुरा बोलते हैं उन पर ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि जो तुम्हें सराह रहे हैं उनके प्रति प्रतिबद्ध रहना ज्यादा जरूरी है। किसी के द्वारा निन्दा के डर से यदि तुम कदम ही आगे ना बढ़ाओ तो अपने लक्ष्य की प्राप्ति तुम्हें कैसे होगी इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को ध्येयवादी बनना होगा और अपना अन्तिम लक्ष्य निर्धारित कर ही आगे बढ़ना होगा।" अन्ना हजारे ने युवा शक्ति को राष्ट्र शक्ति माना और यह स्वीकार किया कि अगर आज का युवक जाग जाए, राष्ट्रीय व सामाजिक दृष्टिकोण उनके जीवन में आ जाए तो देश का उज्जवल भविष्य दूर नहीं है क्योंकि युवक ही इस देश को बदल सकता है।

युवक चाहे जो काम करे (डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, अध्यापक आदि) परन्तु उन्हें अपनी सेवाऐं निःस्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्यों को पूर्ण करते हुए देनी चाहिए क्योंकि परम्परागत मर्यादाओं, जीवन मूल्यों के क्षरण, सरकार के भ्रष्टाचार नियन्त्रण में विफल रहने तथा सामाजिक मानस में भ्रष्टाचार को मौन स्वीकृति मिलने के कारण भ्रष्टाचार का प्रसार बढ़ता जा रहा है और युवा इस भ्रष्टाचार की जकड़ में जकड़ते जा रहे हैं। इस भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फैंकने के लिए अन्ना ने जन लोकपाल विधेयक की मांग की और इसका स्वरूप तय करने में नागरिक समाज को शामिल करने की मांग की[3]। इस विधेयक के अनुसार देश का कोई भी नागरिक लोकपाल या लोकायुक्त के पास केन्द्र या राज्य के किसी कर्मचारी या जन प्रतिनिधि के भ्रष्टाचार की शिकायत लेकर जा सकेगा[4]। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक काल में भ्रष्टाचार को एक विशिष्ट व स्वतंत्र संस्थागत आधार प्राप्त हो गया है जिसमें भ्रष्टाचारी लोग अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं जो लोकपाल को पूरी तरह आने नहीं देना चाहते। इन सब परिस्थितियों से आहत अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म कर

ने भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने का ध्येय बनाया है। उनका मानना है "हमें आजादी तो मिली परन्तु उस रूप में नहीं जिसके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों कुर्बानी दी। इसलिए आजादी की यह दूसरी लड़ाई हमें लड़नी होगी। साधन तो वही हैं परन्तु तरीके बदलने होंगे क्योंकि उस समय शत्रु पराया था, अंग्रेज था, इसलिए विरोध अधिक था समस्त जनता एकजुट थी परन्तु वर्तमान में सत्ता में विराजमान लोग व्यवस्था परिवर्तन नहीं होने देना चाहते ये हमारे भाई हैं और हम इनका विरोध गोली चलाकर नहीं कर सकते हैं। इसलिए कार्यकत्ताओं को यह विचार करना होगा, कि केवल लम्बे–लम्बे भाषणों से कार्य नहीं चलेगा इसके लिए ठोस कदम भी उठाने होगें तभी समाज में प्रभाव आएगा।"

देखा जाए तो अन्ना ने व्यक्ति निर्माण से ग्राम निर्माण और देश निर्माण के गांधीजी के मंत्र को हकीकत में उतारने का सम्पूर्ण प्रयास किया है। आम जनता के मन में भ्रष्टाचार के प्रति घोर असंतोष है, मगर उसके हाथ मजबूरियों की बेड़ियों से बांध दिये गए हैं कि वो इतना सक्षम नहीं हो पाता कि इन सबके खिलाफ आवाज उठाने का साहस ले आए क्योंकि आवाज उठाने से उसको पता नहीं किस रूप में इसका खामियाजा भुगतना पड़े, इससे उसे डर लगता है परन्तु अन्ना हजारे द्वारा उठी बुलन्द आवाज जो व्यवस्था परिवर्तन चाहती है, ने एक बार फिर हर व्यक्ति की आत्मा को झकझोर दिया है, और हर व्यक्ति को इतना सम्बल प्रदान किया है कि वो अपने हक की लड़ाई लड़ सके। आज भ्रष्टाचार ने अवधारणाओं में ही जहर घोल दिया है, धन ही सफलता का एकमात्र सूचक माना जाने लगा है, अन्य बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक गुण व विशेषताएं द्वितीयक होते जा रहे हैं जिसके फलस्वरूप लोगों की निष्ठाएं केवल धनोपार्जन तक ही सीमित हो गई है[5]। इतना भारी जनसमर्थन 2011 में अन्ना हजारे के साथ था, यह एक आंधी थी जो सोए हुए व्यक्ति की आत्मा का झकझोरने के लिए काफी थी। सरकार द्वारा जन लोकपाल के प्रति बेरूखी का वातावरण व इसे सरकारी बिल से बदलने की प्रवृत्ति से क्षुब्ध अन्ना ने आज तक हार नहीं मानी है उनके अनुसार यह आधी जीत है, अभी इस अनशन (2011) की समाप्ति से कोई हारा नहीं, और ना ही किसी को विजेता बताया जा सकता है[6]। अन्ना के अनशन ने एक नया इतिहास भारत में बनाया है[7]। अन्ना के अनशन ने यह भी साबित किया है कि देश का लोकतंत्र व संसदीय प्रणाली अब भी पूरी तरह खोखली नहीं हुई है। वह देर से ही सही लेकिन जनता की आवाज को ज्यादा समय तक अनसुनी नहीं कर सकती।

अन्ना के अनशन ने साफ संकेत दे दिए कि जनता सर्वोपरी है और संसद को उसकी सुननी पड़ेगी। अब तो देखा जाए तो देहातों के कार्यकर्त्ता सत्याग्रह का उपयोग करते दिख रहे हैं। सामाजिक व राजकीय पुनर्रचना के लिए सत्याग्रह का उपयोग कई बार किया गया है। वास्तव में सत्याग्रह में ही शोषितों के शोषण निवारण करने की सत्य व प्रेम की एक बड़ी शक्ति है और वह गुलामी का स्वतंत्रता में, अन्याय का न्याय में और विषमता का समता में रूपान्तरण की शक्ति रखता है। इसमें लोगों का आत्मबल बढ़ता है। अन्ना हजारे का मानना है कि "बदलाव लाने के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए, यह उम्मीद सिंर्फ शब्दों से नहीं है, मेरा मानना है कि जहां 99 प्रतिशत घोर चारित्रिक पतन और भ्रष्टाचार का बोलबाला है वहाँ चरित्र की कसौटी पर खरे उतर सकें ऐसे 1 प्रतिशत लोग भी देश का भाग्य बदल सकते हैं"[8]। इसी आशा के साथ अन्ना हजारे ने 23 मार्च 2018 को किसानों का पक्ष प्रस्तुत करते हुए लोकपाल की जरूरत को सरकार के समक्ष अनशन द्वारा एक बार फिर रखने का अहिसांत्मक प्रयास किया और छः माह बाद फिर से अनशन की चेतावनी सरकार को दी है (यदि लोकपाल मसौदा लागू ना हुआ तो)।

साहित्यावलोकन

खान शमीम; महान् सुधारक अन्ना हजारे; हिन्द पॉकेट बुक्स; नई दिल्ली; 2013 – प्रस्तुत पुस्तक में अन्ना हजारे के जीवन परिचय का सचित्र संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है जो एकदम कहानी की तरह और सरल भाषा में लिखा गया है।

भारद्वाज राजकुमार; गांधी व अन्ना के मध्य का फासला; अनामिका पब्लिशर्स; 2012 – प्रस्तुत पुस्तक में गांधी जी व अन्ना हजारे का तुलनात्मक विवरण है। अन्ना हजारे के बहाने गणतंत्र, संसद, सांसद की ताकत और सबसे बड़ी बहस गांधीजी व अन्ना हजारे के व्यक्तित्व को लेकर शुरू हुई है। बहुत पुरातन व नूतन विचार इस पुस्तक में प्रस्तुत किये गए हैं जो कि नए भारत को गढ़ने के लिए मील का पत्थर साबित होंगे।

राणा पूजा, ठाकुर प्रदीप; जननायक अन्ना हजारे; प्रभात प्रकाशन; दिल्ली; 2012 – यह पुस्तक भ्रष्टाचार के चेहरे और उसे साफ करने में अन्ना हजारे जैसे धर्म योद्धा की भूमिका का सर्वांगींण अध्ययन तथा सशक्त भ्रष्टाचार विरोधी विधेयक तैयार करने की विभिन्न चेष्टाओं का खाका प्रस्तुत करती है, जो सरकारी पदों पर बैठे लोगों को भारत में लोकतांत्रिक शासन के प्रभुत्व क्षेत्र को दूषित करने से रोक सके।

कुमार अरविन्द; अन्ना हजारे – भ्रष्टाचार के विरुद्ध बिगुल बजाने वाले आधुनिक गांधी; प्रभात प्रकाशन; 2 नवम्बर 2017 – प्रस्तुत पुस्तक में अन्ना हजारे के जीवन परिचय व उनके भ्रष्टाचार विरूद्ध किए गए लोकपाल विधेयक प्रयासों पर आधारित है जिसे पढ़कर हमें अन्ना हजारे के बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

त्रिपाठी विनायक; आधुनिक गांधी अन्ना हजारे; आर्या पब्लिकेशन; दिल्ली; 2012 – प्रस्तुत पुस्तक अन्ना हजारे के जीवन के त्याग व बलिदान की एक अविस्मरणीय गाथा है उनकी उपलब्धियों के साथ–साथ उनके संघर्ष की भी चर्चा की गयी है। प्रस्तुत नवयुवकों को भ्रष्टाचार के खिलाफ उद्वेलित करने का पावन कार्य करेगी।

अध्ययन का उद्देश्य

2011 का वर्ष आजाद भारत के इतिहास में प्रमुख सशक्त आन्दोलन "जन लोकपाल विधेयक" के लिए भ्रष्टाचार से त्रस्त जन सैलाब के सड़कों पर उतर आने का वर्ष था। शायद सरकार ने इसकी उम्मीद भी ना की

हो कि बेहद शांत दिखने व रहने वाले सामान्य आम जन 'अन्ना हजारे' नाम की आंधी आएगी और समूचा भारत देश उस आंधी के समर्थन में उठ खड़ा होगा। अन्ना हजारे की चेतावनी सरकार पर भारी पड़ी। जिससे यही समझ में आता है कि गांधीजी के द्वारा दिखाए गए अहिसांत्मक सत्याग्रह के पथ पर चलकर वर्तमान में भी अन्याय व अत्याचार के खिलाफ सफलता प्राप्त की जा सकती है। मेरे द्वारा इस लेख को लिखने का यही उद्देश्य है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ उठी इस आवाज में जनता को अन्ना हजारे के सत्याग्रह आन्दोलन में उनकी तरह साहस का परिचय देते हुए सदैव उनका सम्बल बन उनके साथ खड़े रहना चाहिए। प्रथम बार 2011 जैसा जन समर्थन व मीडिया समर्थन हमें 2018 में देखने को नहीं मिला क्योंकि जनता की सोच अन्याय व भ्रष्टाचार को सहन कर शान्ति से रहने की हो गई है। वास्तविक लोकतंत्र की राह पर चलने के लिए प्रत्येक व्यक्ति का आजाद होना, विकसित होना आवश्यक है और इसके लिए एक विकसित सोच का होना आवश्यक है जो अन्ना हजारे के व्यक्तित्व में हमें देखने को मिलती है।

निष्कर्ष

इससे यही स्पष्ट होता है कि महात्मा गांधी ने आजादी से पूर्व सत्याग्रह की जो लहर चलाई 21वीं सदी में उसका अनुसरण करते हुए अन्ना हजारे ने जनता में एक नई सोच की ज्योति जगाई। यह जब तक प्रासंगिक रहेगा जब तक समाज में भेदभाव, अन्याय, शोषण, अत्याचार, गरीबी, भ्रष्टाचार आदि सामाजिक बुराईयां व्याप्त है। इस प्रकार अन्ना हजारे ने 21वीं शताब्दी में यह अभूतपूर्व कार्य करके अहिसंक क्रांति के सार्वभौमिक अस्त्र के रूप में सत्याग्रह को पुनः उपयोगी सिद्ध कर दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कुमार अरविन्द; अन्ना हजारे – भ्रष्टाचार के विरुद्ध बिगुल बजाने वाले आधुनिक गांधी; प्रभात प्रकाशन; 2 नवम्बर 2017; पृ. 6–7*
2. *https://youtu.be/UUOGJ6XAXRW.*
3. *चौधरी देवप्रकाश; लोकनायक अन्ना हजारे; हिन्द पॉकेट बुक्स; दिल्ली; 2011; पृ. 65*
4. *बघेल डॉ. वीरेन्द्र सिंह; अन्ना हजारे; अनुराग प्रकाशन; नई दिल्ली; 2013; पृ. 130*
5. *त्रिपाठी विनायक; आधुनिक गांधी अन्ना हजारे; आर्या पब्लिकेशन; दिल्ली; 2012; पृ. 34–38*
6. *राणा पूजा, ठाकुर प्रदीप; जननायक अन्ना हजारे; प्रभात प्रकाशन; दिल्ली; 2012; पृ.147*
7. *भारद्वाज राजकुमार; गांधी व अन्ना के मध्य का फासला; अनामिका पब्लिशर्स; 2012; पृ. 53*
8. *खान शमीम; महान् सुधारक अन्ना हजारे; हिन्द पॉकेट बुक्स; नई दिल्ली; 2013; पृ. 51*